शिक्षक शिक्षा में नवाचारपूर्ण अभ्यास

भरत सिंह, सहायक प्रोफेसर, शाह सतनाम जी कॉलेज ऑफ एजुकेशन सिरसा, हरियाणा, ईमेल: bharatgusaiana@gmail.com

सारांश

शिक्षक शिक्षा प्रणाली स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षक शिक्षा प्रणाली का पुनरोद्धार और सुदृढ़ीकरण देश में शैक्षिक मानकों को ऊंचा उठाने का एक शक्तिशाली साधन है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई मुद्दों पर त्वरित ध्यान देने की आवश्यकता है। इनमें से एक है शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में नवाचार की आवश्यकता।

नवाचार का अर्थ है सीमाओं से परे सोचना और ऐसा कुछ नया बनाना जो पहले से मौजूद चीजों से भिन्न हो। बिना नवाचार के कोई प्रगति संभव नहीं है। शिक्षकों को नवाचारी होना चाहिए और उनकी प्रशिक्षण संस्थाओं से ही यह प्रक्रिया शुरू होनी चाहिए। शिक्षक शिक्षा में नवाचार में आईटी साक्षरता, इंटरैक्टिव टेली-कॉन्फ्रेंसिंग और अन्य आधुनिक विधियाँ शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई, 1986) ने कहा था, "मौजूदा शिक्षक शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से पुनर्गठित या पुनर्निर्मित करने की आवश्यकता है।" दुर्भाग्यवश, भारत में माध्यमिक शिक्षक शिक्षा संस्थान अधिकांशतः नवाचारी नहीं हैं। अवरोधक कारकों में भौतिक सुविधाओं और धन की कमी, शिक्षक शिक्षकों के बीच नवाचारों का सीमित प्रसार, कठोर ढांचा और अनुसंधान अभिविन्यास की कमी शामिल हैं। इस पत्र में लेखक ने शिक्षक शिक्षा में आवश्यक नवाचार, अवरोधक कारकों पर प्रकाश डाला है और इन चुनौतियों को दूर करने के लिए सुझाव दिए हैं।

कुंजीशब्द: शिक्षक शिक्षा, नवाचार, अवरोधक कारक

Introduction / परिचय

किसी राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। नागरिकों की गुणवत्ता शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, और शिक्षा की गुणवत्ता योजनाकारों, शिक्षाविदों और प्रशासकों के संयुक्त प्रयासों पर निर्भर करती है। हालांकि, सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षकों की गुणवत्ता है। उत्कृष्ट और कुशल शिक्षक राष्ट्र की तकदीर बदल सकते हैं। एक शिक्षक बच्चे की छिपी हुई क्षमताओं को उजागर करने में मदद करता है और विद्यार्थियों में निहित गुणों को स्पष्ट करता है। शिक्षण-प्रक्रिया में शिक्षकों की महत्ता बहुत अधिक है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953) की रिपोर्ट में कहा गया है, "हम इस बात से आश्वस्त हैं कि प्रस्तावित शैक्षिक पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक है - उसकी व्यक्तिगत विशेषताएँ, उसकी शैक्षिक योग्यताएँ, उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और समाज में उसका स्थान।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) भी इसी बात को दोहराती है, "कोई भी समाज अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।" शिक्षक किसी भी शैक्षणिक संस्थान की वास्तविक और गतिशील शक्ति होते हैं।

यूनेस्को के प्रकाशन *शिक्षक की बदलती भूमिका* में कहा गया है कि एक समय था जब शिक्षक की भूमिका नई पीढ़ी को ज्ञान और अनुभव प्रदान करने की थी। हालांकि, समकालीन समाज में तीव्र परिवर्तन की गति ने इस भूमिका को अपर्याप्त बना दिया है। आधुनिक शिक्षक को एक परिवर्तनकारी एजेंट होना चाहिए। यह सिद्धांत विकासशील देशों और औद्योगिक राष्ट्रों दोनों पर लागू होता है, जहाँ शिक्षकों की भूमिका लगातार विकसित हो रही है। जैसा कि गोबल और पोर्टर (1977) ने कहा है, शिक्षक की भूमिका में नए आयाम समाज में निरंतर परिवर्तन के दबाव का उत्तर हैं।

वैश्वीकरण, उच्च प्रौद्योगिकी, आर्थिक परिवर्तन, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और स्थानीय विकास के संदर्भ में, शिक्षक शिक्षा संस्थानों को निरंतर शैक्षिक सुधारों में संलग्न रहना चाहिए (चेंग, 2005)। इन सुधारों के कारण शिक्षकों को कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त नई जिम्मेदारियाँ लेनी पड़ती हैं। अब शिक्षक स्कूल प्रबंधन, पाठ्यक्रम योजना, नए शिक्षकों का मार्गदर्शन, स्टाफ विकास, स्कूल-आधारित क्रियाशील शिक्षण परियोजनाएँ, और अभिभावकों व सामुदायिक नेताओं के साथ सहयोग में शामिल होते हैं (बोल्स और ट्रोवेन, 1996; चेंग, चौ और त्सुई, 2001; फेसेलर और उंगारेत्ती, 1994; मर्फी, 1995)।

शिक्षकों को इन विस्तारित भूमिकाओं को निभाने और शिक्षा सुधारों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रभावी ढंग से तैयार करना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में नवाचार की आवश्यकता है ताकि शिक्षक आधुनिक शिक्षा वातावरण की जटिलताओं को संभालने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से सुसज्जित हो सकें ।

पूर्व-सेवा शिक्षक शिक्षा में नवाचार और परिवर्तन

नवाचार का अर्थ है पारंपरिक सीमाओं से परे सोचने और नए दृष्टिकोण या विधियों को विकसित करने की क्षमता। पूर्व-सेवा शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में, नवाचार को बढ़ावा देना शैक्षिक परिणामों में सुधार और शिक्षकों को समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना आवश्यक है। बिना नवाचार और परिवर्तन के, शिक्षक शिक्षा में

प्रगति सीमित रहती है। महत्वपूर्ण रूप से, नवाचारों को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षकों की जागरूकता, भागीदारी और प्रतिबद्धता आवश्यक है। इसलिए, भविष्य के शिक्षकों में नवाचारी सोच को विकसित करना शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की प्राथमिकता होनी चाहिए।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार की प्रमुख पहल

भारत की स्वतंत्रता के बाद से, कई आयोगों और समितियों ने शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए नवाचार की सिफारिश की है। इनमें प्रमुख हैं:

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1953)
शिक्षा आयोग (1964-1966)
अंतरराष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परियोजना दल (1954)
योजना परियोजना समिति (1963)
भारत में माध्यमिक शिक्षकों का अध्ययन समूह (1964)
भारतीय शिक्षक शिक्षाशास्त्री संघ (1973)
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)
राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE, 1998)

शिक्षक शिक्षा में नवाचार की महत्वपूर्ण पहल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE, 1986) ने मौजूदा शिक्षक शिक्षा प्रणाली को "सुधारने या पुनर्गठन" करने की आवश्यकता को रेखांकित किया। इससे कई नवाचारी पहलों की शुरुआत हुई, जिनमें शामिल हैं:

1. NCTE की स्थापना (1995): एक वैधानिक निकाय जिसे शिक्षक शिक्षा को विनियमित और उन्नत करने का कार्य सौंपा गया।
2. स्कूल शिक्षकों के लिए जन-ओरिएंटेशन कार्यक्रम (PMOST) (1986-1990): सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में स्कूल शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए केंद्र प्रायोजित योजना।
3. प्राथमिक शिक्षकों के लिए विशेष ओरिएंटेशन कार्यक्रम (SOPT) (1993-1994): प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास का प्रावधान।
4. ब्लॉक और क्लस्टर संसाधन केंद्र: प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों और प्रशासकों की व्यावसायिक वृद्धि के लिए स्थापित।
5. इंटरएक्टिव टेली-कॉन्फ्रेंसिंग: कर्नाटक और मध्य प्रदेश में सेवा के दौरान शिक्षक प्रशिक्षण के लिए सफलतापूर्वक लागू।
6. शिक्षक शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखाएं: 1978, 1988 और 1998 में जारी की गईं ताकि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार हो सके।
7. आईसीटी साक्षरता पहल: NCTE ने शिक्षा में तकनीकी एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए 'आईटी साक्षरता' पर एक सीडी-रोम तैयार की।
8. मानवाधिकार और राष्ट्रीय मूल्यों पर मॉड्यूल: भविष्य के शिक्षकों को हमारे संविधान में निहित मूल्यों से परिचित कराने के लिए NCTE द्वारा विकसित स्वयं-शिक्षण मॉड्यूल।

शिक्षक शिक्षा में नवाचारी कार्यक्रम

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण को बेहतर बनाने के लिए कई नवाचारी कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जिनमें शामिल हैं:

बी.सी.एड. (1989), DAVV, इंदौर,
एम.सी.एड. (1991), DAVV, इंदौर
मास्टर ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी (कंप्यूटर एप्लीकेशंस), SNDT विश्वविद्यालय, मुंबई
एम.टेक. (एजुकेशनल टेक्नोलॉजी), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
बी.एससी. इन टीचिंग टेक्नोलॉजी, सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय
एचएसटीपी प्रशिक्षण शिक्षक, एकलव्य, मध्य प्रदेश (1982)
गतिविधि आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, DAVV, इंदौर (1991)
व्यक्तिगत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, लखनऊ विश्वविद्यालय (1996)
समग्र शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, मुंबई विश्वविद्यालय (2000)
चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (1955)
चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, RIE, NCERT (1963)
बी.एड. (शैक्षिक प्रौद्योगिकी), AEC शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज, पचमढ़ी, मध्य प्रदेश
प्रारंभिक संकाय प्रेरण कार्यक्रम (EFIP) QIP के तहत, AICTE, नई दिल्ली
प्रेरण प्रशिक्षण कार्यक्रम (ITP) QIP के तहत, AICTE, नई दिल्ली

शिक्षक शिक्षा विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु (2008)
IGNOU व्यावसायिक दक्षता उन्नति संस्थान (IPCAT, 2009)
भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थान, गुजरात (2010)

नवाचारी कार्यक्रमों की विशिष्ट विशेषताएं

1. व्यक्तिगत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (DAVV, 1991): व्यक्तिगत शिक्षा आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण दृष्टिकोण को अनुकूलित करने और शिक्षकों को विविध कक्षा वातावरणों को संबोधित करने के लिए तैयार करना।

1. गतिविधि आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (शून्य व्याख्यान कार्यक्रम)

यह कार्यक्रम 1991 में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (DAVV), इंदौर के शिक्षा संकाय में शुरू किया गया और 1996 में लखनऊ में लागू किया गया। इस कार्यक्रम की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **स्वयं सेवकों का चयन**
- **शिक्षार्थी केंद्रित**
- **व्यक्तिगत कक्षा व्यवस्था**
- **भागीदारी पर आधारित दृष्टिकोण**
- **शिक्षक शिक्षकों द्वारा व्याख्यान नहीं (ZIP)**
- **क्या पढ़ना है, कैसे पढ़ना है, कहाँ पढ़ना है, और कब पढ़ना है – इस पर स्वतंत्रता**
- **सहपाठी शिक्षण-शिक्षण मूल्यांकन**
- **प्रस्तुतीकरण के विभिन्न तरीके**
- **क्रमिक चर्चाएँ**
- **स्वयं, सहपाठी और शिक्षक द्वारा मूल्यांकन**

इस कार्यक्रम के माध्यम से समग्र, मैत्रीपूर्ण, आत्मविश्वासी, खुले विचारों वाले, संसाधनपूर्ण, समर्पित, रचनात्मक, नवाचारी और समग्र दृष्टिकोण रखने वाले शिक्षक विकसित होते हैं।

2. समग्र शिक्षक शिक्षा (CASE, 2008)

उच्च शिक्षा में समस्या समाधान के लिए भागीदारी दृष्टिकोण (DAVV, 1992)

वड़ोदरा स्थित उन्नत शिक्षा अध्ययन केंद्र (CASE) ने सेमिनार, शोध और प्रकाशनों के माध्यम से समग्र शिक्षक शिक्षा को सुदृढ़ किया है।

- सड़क पर रहने वाले बच्चों के पुनर्वास पर समग्र दृष्टिकोण से एक शोध अध्ययन किया गया है।
- समग्र विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम और अवकाश समय की गतिविधियों के माध्यम से समग्र विकास पर भी शोध किए जा रहे हैं।

इस कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ:

- विषय ज्ञान
- अंतःविषय दृष्टिकोण
- पर्यावरणीय दृष्टिकोण
- स्वास्थ्य विकास
- भावनात्मक विकास
- आध्यात्मिक विकास
- एकीकृत विकास

3. उच्च शिक्षा में समस्या समाधान के लिए भागीदारी दृष्टिकोण (DAVV, 1992)

- 1992 में DAVV, इंदौर की एम.सी.एड. कक्षा को अक्सर कंप्यूटर प्रोग्राम के माध्यम से समस्याएँ हल करने के लिए दी जाती थीं।
- कक्षा में विभिन्न कार्यक्रम तैयार किए जाते थे और छात्रों द्वारा विभिन्न मानदंडों पर उनका मूल्यांकन किया जाता था:
  - स्रोत कोड की संक्षिप्तता
  - प्रतिक्रिया समय
  - स्मृति उपयोग
  - प्रोग्रामिंग अनुशासन स्तर
  - कार्यक्रम की बौद्धिक स्पष्टता
- छात्रों ने "सी" भाषा में केंडल का सामंजस्य गुणांक (Kendell's Coefficient of Concordance) की गणना के लिए भी प्रोग्राम विकसित किए।

इस दृष्टिकोण से:

- बौद्धिक विकास में वृद्धि होती है।
- विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों को एक साथ सीखने का अवसर मिलता है।
- रचनात्मक सोच और स्वतंत्र विचारधारा को प्रोत्साहन मिलता है।
- अन्य लोगों के संज्ञानात्मक मानचित्रों को समझने और सराहने का अवसर मिलता है।

4. छात्रों में रचनात्मक लेखन क्षमता का विकास (CASE, 2010)

- कक्षा में शिक्षक द्वारा मॉडल कविताओं का पाठ
- कविता की सराहना और रचनात्मक तत्वों की पहचान
- व्यक्तिगत और समूह में विविध कविताओं की रचना
- छात्रों द्वारा अपनी रचित कविताओं का पाठ और कक्षा द्वारा उनकी सराहना

रचनात्मक लेखन में भागीदारी दृष्टिकोण:

- छात्रों की अंतर्निहित रचनात्मक प्रतिभा को प्रकट करता है।
- मौलिक अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करता है।

5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) – शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता उन्नयन संस्थान (IIPCAT, 2009, भारत)

दृष्टि और मिशन:

IIPCAT का उद्देश्य विभिन्न स्तरों की शिक्षा (प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक और उच्च शिक्षा) में शिक्षकों की दक्षता में निरंतर सुधार करना है। इसका लक्ष्य शिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम के संचालन की प्रक्रिया को बेहतर बनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना और मानव जीवन की गुणवत्ता को संपूर्ण रूप से उन्नत करना है।

इसका मिशन शिक्षकों के सभी स्तरों और उनके कार्यों की सभी जिम्मेदारियों में दक्षता को बढ़ावा देना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए IIPCAT विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करेगा, जैसे:

- सेवाकालीन शिक्षा का आयोजन
- गुणवत्तापूर्ण संदर्भ सामग्री की तैयारी
- व्यावहारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था

IIPCAT के प्रयासों से शिक्षकों में अधिक ज्ञान, व्यावसायिक क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होने की उम्मीद है।

6. भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थान, गुजरात (बिल, 2010)

यह बिल शिक्षक शिक्षा संस्थान की स्थापना के लिए है, जिसका उद्देश्य है:

- शिक्षकों के समग्र व्यक्तित्व का विकास
- राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता की व्यापक दृष्टि को प्रोत्साहित करना
- शिक्षकों को एक उदाहरण, मार्गदर्शक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, कलाकार और प्रौद्योगिकीविद् के रूप में विकसित करना

इसका उद्देश्य पूर्वी और पश्चिमी शिक्षा के समन्वय को बढ़ावा देना और पुराने से नए की ओर बदलाव के एजेंट के रूप में कार्य करना है।

7. समेकित शिक्षक शिक्षा (Integrated Teacher Education)

समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की स्थिति मिश्रित रही है—कुछ कार्यक्रम सक्रिय हैं, कुछ समाप्त हो गए हैं, जबकि कुछ नए प्रारंभ हो रहे हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (Regional Institutes of Education) द्वारा वर्षों से संचालित समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को स्वीकृति और मान्यता प्राप्त है।

- विभिन्न संस्थानों द्वारा संचालित समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों पर शोध की आवश्यकता है।
- नवाचारपूर्ण शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को सभी क्षेत्रों में मार्गदर्शन और निगरानी की आवश्यकता है।

8. प्रौद्योगिकी-संयुक्त शिक्षक शिक्षा (Technology Integrated Teacher Education)

शिक्षक शिक्षा में तकनीकी क्रांति हो रही है। अब "बैचलर ऑफ टीचिंग" से "बैचलर ऑफ लर्निंग" और फिर "बैचलर ऑफ ई-लर्निंग" की ओर बदलाव हो रहा है।

तकनीकी परिवर्तन के विभिन्न चरण:

- **ई-लर्निंग 1.0:** ऑनलाइन शिक्षा
- **ई-लर्निंग 2.0:** सोशल मीडिया (ट्विटर, फेसबुक)
- **ई-लर्निंग 3.0:** सेमांटिक वेब और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (नवीनतम तकनीकी प्रगति:
- ओपन एजुकेशन (खुली शिक्षा)

- ओपन कोर्सवेयर
- ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर
- ओपन कंटेंट और ओपन रिसर्च

ई-शिक्षक शिक्षा (e-Teacher Education) की ओर एक नई पहल शुरू की गई है। स्मार्ट क्लासरूम में ई-लर्निंग और ई-टेस्टिंग का समावेश हो रहा है।

उभरती तकनीकी शब्दावली:

- वाई-फाई
- आईपैड
- ई-बुक
- ई-रीडर
- वेबिनार

नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन (NCTE) ने **इंटेल (Intel)** के साथ समझौता करके ई-प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षक शिक्षा को बढ़ावा देने की पहल की है।

नवाचार में बाधक कारक (Resisting Factors in Innovation)

हालाँकि भारत में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में कई नवाचार हैं, फिर भी कुछ प्रमुख बाधाएँ हैं:

1. **भौतिक सुविधाओं और धन की कमी:**
   - अधिकांश कॉलेजों में स्थान, उपकरण और मानव संसाधनों की कमी है।
   - इस कारण कई रचनात्मक विचारों को लागू नहीं किया जा सकता।
2. **नवाचारों का प्रसार न होना:**
   - अधिकांश शिक्षक शिक्षा संस्थान अपने शिक्षकों की व्यावसायिक वृद्धि के प्रति उदासीन हैं।
   - नए विचारों की जानकारी और प्रसार की कमी के कारण शिक्षक नवीन रुझानों से अनभिज्ञ रहते हैं।
3. **प्रशासनिक बाधाएँ:**
   - प्रशासनिक कठिनाइयों के कारण शिक्षक नए प्रयोगों को अपनाने और बनाए रखने में असमर्थ रहते हैं।
   - नवाचारों को लागू करने के लिए आवश्यक सुविधाएँ अक्सर प्रदान नहीं की जातीं।
4. **समर्थन की कमी:**
   - अभ्यास स्कूलों से अपेक्षित सहयोग न मिलने के कारण शिक्षक नवाचार नहीं अपना पाते।
   - स्कूल हमेशा अपनी सुविधाएँ नवाचार के लिए उपलब्ध कराने के लिए तैयार नहीं होते।

आपने शिक्षक शिक्षा में नवाचारों के बारे में जानकारी साझा की है। इसमें निम्नलिखित प्रमुख बिंदु शामिल हैं:

1. **IGNOU Institute of Professional Competency Advancement of Teachers (IIPCAT), 2009**: इस संस्थान का उद्देश्य विभिन्न स्तरों के शिक्षकों की दक्षता में सुधार करना है, जिसमें प्री-स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक शामिल है। यह संस्थान शिक्षकों के लिए इन-सेवा शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण संदर्भ सामग्री की तैयारी, और व्यावहारिक प्रशिक्षण जैसी रणनीतियों का उपयोग करता है ताकि वे अधिक जागरूक, पेशेवर रूप से सक्षम और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बन सकें।
2. **भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थान, गुजरात (अधिनियम, 2010)**: इस अधिनियम का उद्देश्य एक ऐसे संस्थान की स्थापना करना है जो शिक्षकों के समग्र व्यक्तित्व विकास, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करे, और उन्हें मित्र, दार्शनिक, मार्गदर्शक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, कलाकार, तकनीकी विशेषज्ञ, और आदर्श संप्रेषक के रूप में विकसित करे। यह संस्थान पूर्व और पश्चिम के नए रुझानों का समन्वय करते हुए परिवर्तन के एजेंट के रूप में कार्य करेगा।
3. **समेकित शिक्षक शिक्षा**: समेकित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का मिश्रित परिदृश्य है; कुछ सक्रिय हैं, कुछ समाप्त हो गए हैं, और कुछ नए शुरू हो रहे हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदान किए गए समेकित कार्यक्रमों को स्वीकृति और मान्यता प्राप्त है। विभिन्न संस्थानों द्वारा पेश किए गए इन कार्यक्रमों पर अनुसंधान और नवाचारी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की निगरानी की आवश्यकता है।
4. **प्रौद्योगिकी एकीकृत शिक्षक शिक्षा**: शिक्षक शिक्षा में तकनीकी क्रांति हो रही है, जिसमें बैचलर ऑफ टीचिंग से बैचलर ऑफ लर्निंग, विशेषकर ई-लर्निंग की ओर बदलाव शामिल है। ई-लर्निंग 1.0 (ऑनलाइन लर्निंग) से ई-लर्निंग 2.0 (ट्विटर, फेसबुक) और फिर ई-लर्निंग 3.0 (सेमांटिक वेब) तक का विकास हो रहा है, जो सामग्री से समुदाय और फिर कृत्रिम बुद्धिमत्ता की ओर अग्रसर है। स्मार्ट कक्षाओं, ई-लर्निंग, ई-टेस्टिंग, डिजिटल लेसन डिज़ाइन, और ई-पोर्टफोलियो जैसी अवधारणाएँ आम हो रही हैं।

नवाचार में बाधक कारक:

हालांकि भारत में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में कई नवाचारी प्रथाएँ मौजूद हैं, लेकिन कुछ बाधाएँ हैं जो इन संस्थानों

को नवाचारी बनने से रोकती हैं:

1.भौतिक सुविधाओं और धन की कमी: कई कॉलेजों में स्थान, उपकरण, और स्टाफ की कमी है, जिससे वे नवाचार अपनाने में असमर्थ हैं।

2.शिक्षक शिक्षकों के बीच नवाचारों का प्रसार न होना: कई शिक्षक शिक्षा संस्थान अपने शिक्षकों के पेशेवर विकास के प्रति उदासीन हैं, जिससे वे अपने क्षेत्र में नए रुझानों से अनभिज्ञ रहते हैं।

3.सेवा की कमी: प्रशासनिक कठिनाइयों के कारण, शिक्षक प्रशिक्षक नए प्रयोगों को अपनाने और बनाए रखने में असमर्थ हैं, क्योंकि इसके लिए आवश्यक सुविधाएँ आमतौर पर प्रदान नहीं की जाती हैं।

4. समर्थन की कमी: अभ्यासात्मक स्कूलों के सहयोग न करने के कारण, शिक्षक प्रशिक्षक नवाचारों को अपनाने में असमर्थ हैं, क्योंकि ये स्कूल आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने में हमेशा इच्छुक नहीं होते। **शिक्षक शिक्षकों का नए विचारों को आज़माने से बचना** – शिक्षक प्रशिक्षक नए विचारों को आज़माने से बचते हैं क्योंकि वे अपनी दैनिक दिनचर्या में कोई बाधा नहीं चाहते।

5. कठोर ढांचा – यह पाया गया है कि पाठ्यक्रम निर्माण और सिद्धांत की कठोर प्रणाली शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में पारंपरिक प्रथाओं को बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार है। कठोर ढांचे के तहत वर्तमान परीक्षा प्रणाली नवाचार की प्रक्रिया में एक बड़ा अवरोध है।

6. स्टाफ की विशेषज्ञता की कमी – अधिकांश माध्यमिक शिक्षक शिक्षा संस्थानों में ऐसे शिक्षक प्रशिक्षक कार्यरत हैं, जिन्हें देश या विदेश में संस्थानों की कार्यप्रणाली का अनुभव नहीं है। स्टाफ सदस्यों की विशेषज्ञता की कमी के कारण प्रशिक्षण संस्थानों में नवाचार नहीं फैल पाया है।

7. अनुसंधान अभिवृत्ति की कमी – अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षकों में अनुसंधान के प्रति रुचि विकसित नहीं हुई है। प्रशिक्षण संस्थानों में अपनाई गई योजनाएँ और प्रथाएँ सामान्य समझ पर आधारित हैं, न कि अनुसंधान निष्कर्षों पर।

8. पारस्परिक संबंध संकट – शिक्षक प्रशिक्षक महसूस करते हैं कि स्टाफ के सदस्यों के बीच सहयोग की कमी है। सहकर्मियों के बीच पेशेवर प्रतिद्वंद्विता है और रचनात्मक कार्यों के लिए कोई पहल नहीं की जाती। ऐसा प्रतीत होता है कि पारस्परिक संबंधों की कमी नवाचार के प्रसार में एक और बाधा है।

9. बाहरी एजेंसियों द्वारा निर्णय लेना – शिक्षक प्रशिक्षक विश्वविद्यालय और सरकारी अधिकारियों द्वारा लिए गए निर्णयों का पालन मात्र करते हैं। इससे वे अपनी पहल और नवाचार की इच्छा खो देते हैं, यहाँ तक कि शिक्षण विधियों, पर्यवेक्षण और छात्र शिक्षकों को मार्गदर्शन देने जैसे क्षेत्रों में भी, जो उनके अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

इन बाधाओं को दूर करने के लिए, शिक्षक शिक्षा संस्थानों को भौतिक संसाधनों में सुधार, नवाचारों के प्रसार को बढ़ावा देने, प्रशासनिक समर्थन सुनिश्चित करने, और अभ्यासात्मक स्कूलों के साथ मजबूत साझेदारी स्थापित करने की आवश्यकता है।

शिक्षक शिक्षकों को मोबाइल बनाना चाहिए ताकि वे अपने संस्थानों के बाहर अपनी पेशेवर दुनिया को देख सकें।

प्रशिक्षण स्कूलों, प्रशासकों, छात्र शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय से सेवा और समर्थन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

शिक्षक शिक्षकों को उनके पेशेवर विकास के लिए उचित प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

संस्थानों द्वारा पेशेवर पत्रिकाओं का प्रकाशन और सदस्यता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालय विभागों और चयनित सरकारी कॉलेजों में अनुसंधान शाखाएँ शुरू की जानी चाहिए।

शिक्षण स्टाफ के बीच एक स्वस्थ संबंध नए तरीकों को विकसित करेगा और नए लक्ष्यों की ओर बढ़ेगा।

प्रबंधन और प्रशासकों को संस्थानों के स्वास्थ्य को बनाए रखने में सतर्क रहना चाहिए ताकि वे नवाचारशील और प्रगतिशील बने रहें।

निष्कर्ष

नई सहस्राब्दी की चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत में शिक्षक शिक्षा में जबरदस्त बदलाव की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षकों को नई नवाचारों से संबंधित विभिन्न पहलुओं में गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उपरोक्त उल्लिखित समस्याएं चुनौतीपूर्ण हैं और इन समस्याओं को दूर करने के लिए रणनीतियों की आवश्यकता है। इसलिए, एनसीटीई, एससीईआरटी/एसआईई और विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग को शिक्षा प्रणाली को नवाचारशील बनाने के लिए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। भारतीय शिक्षा परिवर्तन की स्थिति में है। राष्ट्रीय दृष्टि और मिशन निश्चित रूप से नवाचारों को प्रोत्साहित करेंगे, जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम (एनसीटीई, 2009) और शिक्षक शिक्षा: नीति निर्माण की ओर प्रतिबिंब (एनसीटीई, 2009) के माध्यम से स्पष्ट होता है। नवाचारशील एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए प्रस्ताव हैं (नवरचना विश्वविद्यालय, वडोदरा, 2000; कारोल्स विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, 2009)। भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थान, गुजरात (विधेयक 4, 2010) पर एक विधेयक पारित किया गया है, जो शोध, प्रशिक्षण और विकास, विस्तार, क्षमता निर्माण के लिए एक उत्कृष्टता

केंद्र स्थापित करने की परिकल्पना करता है, जिससे शिक्षकों और संस्थानों को प्रेरित किया जा सके। समग्र शिक्षा के लिए शोध हो रहा है। यहां तक कि विज्ञान और कला जैसे सामान्य धाराओं ने भी शिक्षक शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया है (गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, डिंडीगुल)। आईसीटी आधारित संरचनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षकों की पेशेवर दक्षताओं को बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत सभी के लिए संगत शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे विभिन्न समर्पित कार्यक्रमों के माध्यम से महसूस किया जा रहा है, जो मूल रूप से नवाचारशील प्रकृति के हैं।

संदर्भ

बोल्स, के., और ट्रोवेन, वी. (1996)। शिक्षक नेता और शक्ति: कक्षा से स्कूल सुधार प्राप्त करना। जी. मोलेर और एम. कैट्जेनमेयर (संपादक), हर शिक्षक एक नेता के रूप में, स्कूल नेतृत्व के लिए नई दिशाएं, संख्या 1। सैन फ्रांसिस्को: जोसी-बास।

चेंग, वाई. सी. (2005)। शिक्षा को फिर से संरचित करने के लिए एक नया प्रतिमान: वैश्वीकरण, स्थानीयकरण और व्यक्तिगतकरण। डॉर्ड्रेच्ट, नीदरलैंड: स्प्रिंगर।

चेंग, वाई. सी., चाउ, के. डब्ल्यू., और मोक, एम. एम. सी. (संपादक)। (2004)। नई सहस्राब्दी में एशिया-प्रशांत में शिक्षक शिक्षा में सुधार: प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ। डॉर्ड्रेच्ट, नीदरलैंड: क्लूवर अकादमिक पब्लिशर्स।

दास, बी. सी. (2011)। शिक्षक शिक्षा संस्थानों को नवाचारशील होने से क्या रोकता है, एडु ट्रैक्स, वॉल्यूम 10 (6), पृष्ठ 15-18।

डैश, संकर्षण (2006)। शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार: एक विश्लेषण, एडु ट्रैक्स, वॉल्यूम 7 (9)।

डॉ. गोयल और छाया गोयल (2010), शिक्षक शिक्षा में नवाचार। जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, साइंस एंड मैनेजमेंट एजुकेशन, वॉल्यूम 1, 2010, पृष्ठ 24-28।

फेसलर, आर., और उंगारेटी, ए. (1994)। शिक्षक नेतृत्व के लिए अवसरों का विस्तार। डी. आर. वालिंग (संपादक), शिक्षक नेता के रूप में: शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के दृष्टिकोण। इंडियाना, आईएन: फाई डेल्टा कप्पा एजुकेशनल फाउंडेशन।

गोबल, नॉर्मन एम. और जेम्स एफ. पोर्टर (1977)। शिक्षक की बदलती भूमिका: अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण। यूनेस्को, पेरिस, पृष्ठ 234।

कोठारी, आर. जी. (2009), माध्यमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम: कुछ मुद्दे, विश्वविद्यालय समाचार, वॉल्यूम 47 (25), जून 22-28।

मोक, एम. एम. सी., और चेंग, वाई. सी. (2001)। नेटवर्क वाले वातावरण में शिक्षक आत्म-अध्ययन। वाई. सी. चेंग, के. डब्ल्यू. चाउ, और के. टी. त्सुई (संपादक), भविष्य के लिए नई शिक्षक शिक्षा में।